विचार बिन्दु

सात सागरों में जल की अपेक्षा मानव के नेत्रों से कहीं अधिक आंसू बह चुके हैं। –बुद्ध

प्राकृतिक जलवायु समाधान के बिना पारिस्थितिक तंत्रों को बचा पाना संभव नहीं है

वन प्रतिरोधक क्षमता का तात्पर्य है कि वन किस हद तक प्राकृतिक आपदाओं, जलवायु परिवर्तन और मानव गतिविधियों के प्रभावों से उबर सकते हैं। यह क्षमता उन वनों को परिभाषित करती है जो संकटों का सामना कर पुन: अपनी पारिस्थितिकीय स्थिति को बनाए रखते हैं। प्रतिरोधक क्षमता का आकलन करने के लिए विभिन्न मानदंडों का उपयोग किया जाता है जैसे जैव विविधता, वनस्पति संरचना और पारिस्थितिकी तंत्र सेवाएं। प्रतिरोधक क्षमता वाले उष्णकटिबंधीय वन वे हैं जो प्राकृतिक आपदाओं जैसे तूफान, सूखा, आग आदि के बाद भी तेजी से पुन: स्थिर हो जाते हैं। इसके उदाहरण के रूप में अमेज़नवर्षावन को देखा जा सकता है जो कई दशकों से कई प्रकार के संकटों का सामना करते हुए भी अपने जैव विविधता को बनाए रखने में सक्षम रहे हैं। इन वनों की पहचान करने के लिए वैज्ञानिक विभिन्न संकेतकों का उपयोग करते हैं जैसे वनस्पति का घनत्व, प्रजातियों की विविधता और पारिस्थितिकी तंत्र की कार्यक्षमता।

वन प्रतिरोधक क्षमता का महत्व कई कारणों से है। सबसे पहले, यह वन संरक्षण में सहायक होती है। प्रतिरोधक वनों का संरक्षण करने से अन्य वनों की तुलना में इनकी जैव विविधता और पारिस्थितिकी तंत्र सेवाओं को बनाए रखना आसान होता है। वन बहाली में भी यह महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है, क्योंकि प्रतिरोधक वनों को बहाल करने के लिए कम संसाधनों की आवश्यकता होती है और यह तेजी से पुन: स्थिर हो जाते हैं। प्रतिरोधक वनों का महत्व कई पारिस्थितिकी तंत्र सेवाओं के लिए भी होता है। ये वन जल चक्र को संतुलित रखते हैं, मिट्टी के क्षरण को रोकते हैं और स्थानीय जलवायु को नियंत्रित करते हैं। इसके साथ ही, प्रतिरोधक वनों में फूलों और जीवों की विविधता अधिक होती है, जिससे जैव विविधता को संरक्षित करने में मदद मिलती है। कार्बन अवशोषण में भी प्रतिरोधक वनों की भूमिका महत्वपूर्ण होती है। ये वन अधिक कार्बन को अवशोषित कर वायुमंडल में कार्बन डाइऑक्साइड की मात्रा को कम करते हैं, जिससे जलवायु परिवर्तन को नियंत्रित करने में सहायता मिलती है। इस प्रकार, प्रतिरोधक वनों का संरक्षण और बहाली जलवायु समाधान के रूप में महत्वपूर्ण है।

स्थिरता की दृष्टि से भी प्रतिरोधक वन महत्वपूर्ण होते हैं। ये वन न केवल पर्यावरण को संरक्षित करते हैं बल्कि स्थानीय समुदायों की आजीविका को भी समर्थन प्रदान करते हैं। उदाहरण के लिए, दक्षिण-पूर्व एशिया के वन स्थानीय समुदायों को खाद्य, जल और औषधीय पौधों की आपूर्ति करते हैं। इसके अलावा, पर्यटन के माध्यम से भी स्थानीय अर्थव्यवस्था को बढ़ावा मिलता है। उष्णकटिबंधीय वनों की प्रतिरोधक क्षमता को बढ़ाने के कई तरीके हैं। सबसे पहले, जैव विविधता को बनाए रखना आवश्यक है। विभिन्न प्रजातियों की उपस्थिति वन को विभिन्न संकटों से उबरने में सक्षम बनाती है। दूसरा तरीका है वनस्पति संरचना को बनाए रखना, जिससे वन की स्थिरता बढ़ती है। स्थानीय समुदायों की भागीदारी भी महत्वपूर्ण होती है। वे वन संरक्षण और बहाली में सक्रिय भूमिका निभा सकते हैं।

वनों और वनों की प्रतिरोधक क्षमता को बचाना एक प्राकृतिक जलवायु समाधान है। ये वन जलवायु परिवर्तन के प्रभावों को कम करने, जैव विविधता को बनाए रखने और पारिस्थितिकी तंत्र सेवाओं को बनाए रखने में मदद करते हैं। इसके अलावा, ये स्थानीय समुदायों की आजीविका को भी समर्थन प्रदान करते हैं। इसलिए, इन वनों का संरक्षण और बहाली अत्यंत महत्वपूर्ण है। उष्णकटिबंधीय वनों की प्रतिरोधक क्षमता को बढ़ाने के लिए सामूहिक प्रयासों की आवश्यकता है। वैज्ञानिकों, स्थानीय समुदायों और सरकारों को मिलकर काम करना होगा। वन संरक्षण और बहाली के लिए नीतियों का निर्माण और उनका कार्यान्वयन आवश्यक है। इसके साथ ही, पर्यावरण शिक्षा और जागरूकता भी महत्वपूर्ण है, जिससे लोग वनों के महत्व को समझ सकें और उनके संरक्षण में भाग ले सकें। इस प्रकार, हम एक स्थायी और संतुलित पर्यावरण की ओर बढ़ सकते हैं, जिसमें वनों का महत्वपूर्ण योगदान रहेगा।

वन प्रतिरोधक क्षमता, जिसे पारिस्थितिक प्रतिरोधक क्षमता के रूप में भी समझा जाता है, वन पारिस्थितिक तंत्र की एक महत्वपूर्ण विशेषता है। यह वन पारिस्थितिकी तंत्र की उस क्षमता को दर्शाती है जो उसे प्राकृतिक और मानवजनित खतरों से उबरने में सक्षम बनाती है। जैसा कि पहले कहा गया है, इसमें तूफान, सूखा, आग, कीट संक्रमण और जलवायु परिवर्तन शामिल हैं। प्रतिरोधक क्षमता के बिना, वन पारिस्थितिकी तंत्र इन खतरों के सामने अस्थिर हो सकते हैं और अपनी पारिस्थितिकीय कार्यक्षमताओं को खो सकते हैं। उदाहरण के लिए, अमेज़न के वर्षावन जो कि विश्व के सबसे बड़े उष्णकटिबंधीय वनों में से एक है, ने कई प्राकृतिक और मानवजनित खतरों का सामना किया है। इसके बावजूद, अपनी जैव विविधता को संरक्षित रखा है और यही इसकी उच्च प्रतिरोधक क्षमता का संकेत है।

उष्णकटिबंधीय वनों की प्रतिरोधक क्षमता को बढ़ाने के कई तरीके हैं। सबसे पहले, जैव विविधता को बनाए रखना अत्यंत आवश्यक है। विभिन्न प्रजातियों की उपस्थिति वन को विभिन्न संकटों से उबरने में सक्षम बनाती है। दूसरा तरीका है वनस्पति संरचना को बनाए रखना, जिससे वन की स्थिरता बढ़ती है। तीसरा तरीका है स्थानीय समुदायों की भागीदारी को बढ़ावा देना।

प्रतिरोधक क्षमता का आकलन करने के लिए विभिन्न वैज्ञानिक मानदंडों का उपयोग किया जाता है। इनमें जैव विविधता, वनस्पति संरचना, और पारिस्थितिकी तंत्र सेवाएं शामिल हैं। जैव विविधता प्रतिरोधक क्षमता का एक महत्वपूर्ण संकेतक है क्योंकि विविध प्रजातियों की उपस्थिति वन को विभिन्न संकटों से उबरने में सक्षम बनाती है। वनस्पति संरचना भी महत्वपूर्ण है क्योंकि एक सुसंगठित वन संरचना पारिस्थितिकी तंत्र की स्थिरता और कार्यक्षमता को बनाए रखने में मदद करती है। उदाहरण के लिए, एक अध्ययन ने दिखाया कि उच्च जैव विविधता वाले वन सूखा के प्रभावों से तेजी से उबरते हैं।

प्रतिरोधक वनों का संरक्षण वन पारिस्थितिकी तंत्र के स्थायित्व को बनाए रखने के लिए महत्वपूर्ण है। यह संरक्षण न केवल जैव विविधता को बनाए रखता है बल्कि पारिस्थितिकी तंत्र सेवाओं को भी बनाए रखता है जो मानव जीवन के लिए आवश्यक हैं। वन बहाली के संदर्भ में, प्रतिरोधक वनों को बहाल करने के लिए कम संसाधनों की आवश्यकता होती है और ये तेजी से पुन: स्थिर हो जाते हैं। यह विशेष रूप से महत्वपूर्ण है जब हम जलवायु परिवर्तन के प्रभावों को कम करने की बात करते हैं। एक उदाहरण के रूप में, मध्य अमेरिका के कुछ क्षेत्रों में वन बहाली परियोजनाओं ने दिखाया है कि उच्च प्रतिरोधकता वाले वन तेजी से पुन: स्थिर हो जाते हैं और अधिक कार्बन का अवशोषण करते हैं।

कार्बन अवशोषण की दृष्टि से, प्रतिरोधक वन जलवायु परिवर्तन के खिलाफ लड़ाई में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। ये वन अधिक मात्रा में कार्बन को अवशोषित करते हैं और इसे दीर्घकालिक रूप से संग्रहीत करते हैं। यह कार्बन अवशोषण प्रक्रिया वायुमंडल में कार्बन डाइऑक्साइड की मात्रा को कम करने में मदद करती है, जिससे ग्रीनहाउस गैसों का प्रभाव कम होता है। एक अध्ययन के अनुसार, उष्णकटिबंधीय वनों में कार्बन संग्रहण की क्षमता उच्च होती है, विशेषकर जब वे उच्च जैव विविधता वाले होते हैं। इस प्रकार, प्रतिरोधक वनों का संरक्षण और बहाली जलवायु परिवर्तन को कम करने में एक महत्वपूर्ण रणनीति है।

स्थानीय समुदायों की आजीविका के संदर्भ में भी प्रतिरोधक वनों का महत्व अनदेखा नहीं किया जा सकता है। ये वन स्थानीय समुदायों को खाद्य, जल, और औषधीय पौधों की आपूर्ति करते हैं। उदाहरण के लिए, दक्षिण-पूर्व एशिया के वनों में रहने वाले समुदाय अपनी आजीविका के लिए वनों पर निर्भर होते हैं। इसके अलावा, पर्यटन भी इन वनों से जुड़ा हुआ है, जो स्थानीय अर्थव्यवस्था को बढ़ावा देता है। प्रतिरोधक वनों का संरक्षण स्थानीय समुदायों को स्थायी आर्थिक लाभ प्रदान कर सकता है।

उष्णकटिबंधीय वनों की प्रतिरोधक क्षमता को बढ़ाने के कई तरीके हैं। सबसे पहले, जैव विविधता को बनाए रखना अत्यंत आवश्यक है। विभिन्न प्रजातियों की उपस्थिति वन को विभिन्न संकटों से उबरने में सक्षम बनाती है। दूसरा तरीका है वनस्पति संरचना को बनाए रखना, जिससे वन की स्थिरता बढ़ती है। तीसरा तरीका है स्थानीय समुदायों की भागीदारी को बढ़ावा देना। स्थानीय समुदाय वन संरक्षण और बहाली में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं। इसके लिए शिक्षा और जागरूकता कार्यक्रम चलाना महत्वपूर्ण है ताकि लोग वनों के महत्व को समझ सकें और उनके संरक्षण में सक्रिय भाग ले सकें।

अंत में, उष्णकटिबंधीय वनों की प्रतिरोधक क्षमता को बढ़ाने के लिए सामूहिक प्रयासों की आवश्यकता है। वैज्ञानिकों, स्थानीय समुदायों और सरकारों को मिलकर काम करना होगा। वन संरक्षण और बहाली के लिए नीतियों का निर्माण और उनका कार्यान्वयन आवश्यक है। इसके साथ ही, पर्यावरण शिक्षा और जागरूकता भी महत्वपूर्ण है, जिससे लोग वनों के महत्व कोसमझ सकें और उनके संरक्षण में भाग ले सकें। इस प्रकार, हम एक स्थायी और संतुलित पर्यावरण की ओर बढ़ सकते हैं, जिसमें वनों का महत्वपूर्ण योगदान रहेगा।

वन प्रतिरोधक क्षमता एक महत्वपूर्ण अवधारणा है जो वन पारिस्थितिक तंत्र की दीर्घकालिक स्थिरता और स्वास्थ्य के लिए आवश्यक है। प्रतिरोधक क्षमता का महत्व न केवल पर्यावरणीय दृष्टिकोण से बल्कि आर्थिक और सामाजिक दृष्टिकोण से भी है। जैव विविधता, वनस्पति संरचना और पारिस्थितिकी तंत्र सेवाएं प्रतिरोधक क्षमता के मुख्य घटक हैं। उष्णकटिबंधीय वनों का संरक्षण और बहाली जलवायु परिवर्तन को कम करने, जैव विविधता को बनाए रखने और स्थानीय समुदायों की आजीविका को समर्थन प्रदान करने में महत्वपूर्ण है। सामूहिक प्रयासों और नीतियों के माध्यम से हम उष्णकटिबंधीय वनों की प्रतिरोधक क्षमता को बढ़ा सकते हैं और एक स्थायी भविष्य की दिशा में आगे बढ़ सकते हैं।

वन प्रतिरोधक क्षमता उष्णकटिबंधीय वन पारिस्थितिक तंत्र में विनाशकारी परिवर्तनों से बचाव कर सकती है। परिवर्तन सामान्य है, लेकिन यह अचानक और कठोर विपरीत स्थिति में परिवर्तित हो सकता है। हालांकि विभिन्न घटनाएँ ऐसे परिवर्तनों को उत्प्रेरित कर सकती हैं, अध्ययन बताते हैं कि प्रतिरोधक क्षमता की हानि आमतौर पर वैकल्पिक स्थिति की ओर ले जाती है। इसका मतलब है कि ऐसे पारिस्थितिक तंत्रों के सतत प्रबंधन की रणनीतियों को प्रतिरोधक क्षमता बनाए रखने पर केंद्रित होना चाहिए। प्रतिरोधक क्षमता को बढ़ावा देना न केवल पारिस्थितिकी तंत्र की स्थिरता और जैव विविधता को बनाए रखेगा, बल्कि जलवायु परिवर्तन के प्रभावों को कम करने और स्थानीय समुदायों की आजीविका को सुरक्षित रखने में भी मदद करेगा।

–अतिथि सम्पादक,
डॉ. दीप नारायण पाण्डेय
(भारतीय वन सेवा से सेवानिवृत्त तथा वर्तमान में राष्ट्रीय आयुर्वेद संस्थान में विजिटिंग प्रोफेसर)
(यह लेखक के निजी विचार हैं और 'सार्वभौमिक कल्याण के सिद्धांत' से प्रेरित हैं)

अमेरिकी लोकतंत्र से हम क्या सीख सकते हैं?

राजेश्वरसिंह

वर्तमान समय में सारी दुनिया की निगाह संयुक्त राज्य अमेरिका के राष्ट्रपति चुनाव पर है और सभी बडी बेसब्री से उक्त चुनाव के नतीजों का इन्तजार कर रहें है। उक्त चुनाव की प्रक्रिया और उससे जुडे हुए विभिन्न पहलुओं के ध्यानपूर्वक अध्ययन और अवलोकन के उपरान्त हम आसानी से इस निष्कर्ष पर पहुँच सकते है कि अमेरिकी लोकतन्त्र की अनेकानेक विशिष्टताओं का अनुकरण व अनुसरण न केवल भारत वरन् विश्व की समस्त लोकतान्त्रिक शासन व्यवस्थाओं के लिए लाभप्रद और हितकारी सिद्ध हो सकता है।

अमेरिकी लोकतन्त्र की सबसे पहली विशेषता हैं, राजनीतिक दलों में आन्तरिक प्रजातन्त्र, जिसके चलते दलों की स्थानीय व राज्यस्तरीय इकाइयों की न केवल राष्ट्रपति, वरन् सीनेट, प्रतिनिधि सभा व अन्य राजनीतिक पदों के प्रत्याशी चयन में महत्वपूर्ण एवं निर्णायक भूमिका होती है। इस हेतु प्रत्याशियों को खुली सार्वजनिक बहस में सहभागिता के माध्यम से न केवल अपनी काबिलियत सिद्ध करनी पडती हैं वरन् विभिन्न सार्वजनिक महत्व के मुद्दों पर अपनी सुचिन्तित व सुविचारित राय को भी स्पष्ट करना होता है। इस सम्पूर्ण प्रक्रिया के माध्यम से प्रत्याशी चयन हेतु जिम्मेदार प्रतिनिधियों व बाद में समस्त मतदाताओं को प्रत्याशी की योग्यता, अध्ययन शीलता एवं वक्तृत्व क्षमता का सम्यक व समुचित आंकलन कर अपनी राय बनाने का सुअवसर प्राप्त होता है। लोकतन्त्र नीति निर्माण एवं नीति क्रियान्वयन में जन सहभागिता को सुनिश्चित करने एवं मतभेदों की सक्रियता के माध्यम से मतैक्य तक पहुँचने की प्रक्रिया का ही संस्थागत स्वरूप है अत: राजनीतिक नेताओं को अपने मन्तव्य व दृष्टिकोण को सुस्पष्ट, तार्किक व सुव्यवस्थित तरीके से प्रस्तुतीकरण में दक्ष होना ही चाहिए और पद विशेष हेतु उनकी सक्षमता का आंकलन भी वस्तुत: इसी आधार पर होना चाहिए। भारत की स्थिति से तुलना करने पर हम पाते है कि यहाँ प्रत्याशी चयन में राजनीतिक दलों की स्थानीय एवं राज्यस्तरीय इकाइयों की भूमिका अपेक्षाकृत कम महत्वपूर्ण हैं और खुली सार्वजनिक बहस के माध्यम से संभावित प्रत्याशी की क्षमता व योग्यता के आकलन का मौका तो यहाँ मिलता ही नहीं क्योंकि विभिन्न लोकमहत्व के मुद्दों पर सार्वजनिक बहस की परम्परा प्रारंभ से ही हमारे देश में नहीं है जो कि दुनिया के सबसे बडे लोकतन्त्र के लिए निश्चित रूप से दुर्भाग्यपूर्ण स्थिति है। वस्तुत: अपनी विचाराधारा के अनुरूप लोकनीति का निर्माण व लोकशिक्षण राजनीतिक दलो का प्रमुखतम दायित्व है अत: सार्वजनिक बहस का सबसे बडा सुपरिणाम यह होगा कि जनसामान्य को विभिन्न मुद्दो पर राजनैतिक दलों के मंतव्य व दृष्टिकोण से अवगत होने का मौक़ा मिलेगा और वे अपने मताधिकार का उपयोग सोच समझ कर कर सकेंगे। इसके अलावा राजनीतिक दलों में आंतरिक लोकतंत्र क़ायम करने के लिए नियमित समयांतराल पर सांगठनिक चुनाव, कार्यकर्ता प्रशिक्षण शिविर, मुखपत्र का प्रकाशन इत्यादि भी आवश्यक है।

अमेरिकी लोकतंत्र की दूसरी प्रमुख विशेषता राजनीतिक नेतृत्व का क्रमिक विकास है। राष्ट्रपति पद पर पूर्व में पदस्थापित रहे राजनेताओं व वर्तमान प्रत्याशियों के राजनीतिक करियर ठाफ का ध्यानपूर्वक अवलोकन करने पर यह पता चलता है कि वे लोग पूर्व में मेयर, स्टेट सीनेटर, गवर्नर, नेशनल सीनेटर इत्यादि पदों पर सफलतापूर्वक कार्य कर चुके हैं। स्थानीय व राज्य स्तर पर राजनीतिक भूमिकाओं के निर्वहन से अर्जित अनुभव उन्हें राष्ट्रीय स्तर पर ज़िम्मेदारी के निर्वहन के लिए आवश्यक अनुभव व आत्मविश्वास प्रदान करता हैं। भारत में भी संसद एवं विधानसभा चुनाव लड़ने से पूर्व पंचायती राज संस्थाओं अथवा नगरीय निकायों में कार्य करने का पूर्वानुभव होने की शर्त आरोपित की जा सकती है ताकि स्थानीय स्तर पर अर्जित राजनीतिक व प्रशासनिक अनुभव राष्ट्रीय व राज्य स्तर पर शासकीय भूमिकाओं का निर्वहन करते समय जनाकांक्षाओ के अनुरूप लोकनीति निर्माण व क्रियान्वयन में सहायक सिद्ध हो सके।

अमेरिकी लोकतंत्र की तीसरी प्रमुख विशेषता राष्ट्रपति पद पर दो कार्यकाल की अधिकतम अवधि का सीमारोपण हैं। इससे न केवल व्यक्तिविशेष पर अत्यधिक निर्भरता की प्रवृत्ति विकसित नहीं होती वरन् हर चार या आठ साल के बाद नए व्यक्ति को नयी सोच, नये विचार एवं नई नीतियों के साथ आने का एवं उन्हें क्रियान्वित करने का मौक़ा भी मिलता है। वस्तुत: भारत में भी दो कार्यकाल अथवा कुल दस साल की समय सीमा को पंचायत, पंचायत समिति, जिला परिषद एवं नगरीय निकाय तथा राज्य एवं राष्ट्रीय स्तर के कार्यकारी प्रमुखों पर समान रूप से लागू करने पर गंभीरता पूर्वक विचार होना चाहिए, साथ ही यह नियम दलों की स्थानीय, जिला एवं राज्य स्तरीय इकाइयों व राष्ट्रीय निकायों के प्रमुखों पर भी लागू होना चाहिए।

अमेरिकी लोकतंत्र की चौथी प्रमुख विशेषता वहाँ की संसद (कांग्रेस) के उच्च सदन (सीनेट) की संरचना है जिसमें सभी राज्यों को क्षेत्रफल अथवा जनसंख्या की विषमता के बावजूद समान प्रतिनिधित्व प्रदान किया गया है जो कि संघवाद के सिद्धान्त के सर्वथा अनुकूल है। इससे सीनेट के सदस्य राष्ट्रीय स्तर पर संबंधित राज्य के हितों के ज़िम्मेदार एवं मुखर प्रवक्ता के रूप में अपनी भूमिका का प्रभावी निर्वहन करते हैं। इसके विपरीत भारत में राज्यसभा यथार्थ में राष्ट्रीय स्तर पर राज्यों की प्रतिनिधि सभा के तौर पर कार्य नहीं करती। सत्य तो यह है कि संसद के दोनों ही सदनों की संरचना व कार्यप्रणाली में अब कोई मौलिक और तात्विक अंतर शेष नहीं रह गया है।

–राजेश्वरसिंह,
आइएएस (सेवानिवृत्त)

बीकानेर में होने लगा सर्दी का अहसास, न्यूनतम तापमान 21 डिग्री तक पहुंचा

सुबह-सवेरे ठंडी हवाओं से सर्दी का एहसास होने लगा है

बीकानेर, (निसं)। बीकानेर में मौसम बदल गया है। दीपावली पर बीकानेर का न्यूनतम तापमान गिरने का सिलसिला एक बार फिर शुरू हो गया है। दो दिन पहले तक पारा 38 डिग्री सेल्सियस तक पहुंच गया था, उसमें तीन डिग्री सेल्सियस की गिरावट आई है। वहीं न्यूनतम तापमान में भी दो डिग्री सेल्सियस से ज्यादा गिरावट का एहसास हो रहा है। सुबह-सवेरे ठंडी हवाओं से सर्दी का एहसास होने लगा है।

बीकानेर में पिछले दिनों सर्दी ने आहट दी थी। इसके बाद फिर पारा चढ़ना शुरू हो गया। बुधवार को बीकानेर में अधिकतम तापमान 38.5 डिग्री सेल्सियस तक पहुंच गया था। इसके बाद गुरुवार को ये गिरकर 35 डिग्री सेल्सियस तक आ गया। वहीं न्यूनतम तापमान 23 से कम होकर 21 डिग्री सेल्सियस के आसपास पहुंच गया है। माना जा रहा है कि आने वाले दिनों में तापमान में और गिरावट आएगी।

■ दिसम्बर और जनवरी में बीकानेर का पारा शून्य से दो-तीन डिग्री सेल्सियस तक पहुंच जाता है, इस बार भी तेज सर्दी पड़ने की आशंका है

10 नवम्बर तक बीकानेर में न्यूनतम तापमान में चार डिग्री सेल्सियस तक की कमी हो सकती है। ऐसे में लोगों को सुबह जल्दी गर्म कपड़ों का सहारा लेना पड़ सकता है। हालांकि दोपहर में सूर्यदेव अपना असर दिखाते रहेंगे।

बीकानेर कार्तिक पूर्णिमा पर कोलायत में कपिल मुनि सरोवर पर होने वाले मेले के बाद सर्दी शुरू होती है। इस बार भी कमोबेश ऐसा ही होने जा रहा है। वैसे सर्दी का सर्वाधिक असर नवंबर के अंतिम दिनों में शुरू होगा। दिसम्बर और जनवरी में बीकानेर का पारा शून्य से दो-तीन डिग्री सेल्सियस तक पहुंच जाता है। इस बार भी काफी सर्दी पड़ने की आशंका है।

उल्लास-रोशनी का पर्व दीपावली हर्षोल्लास से मनाया

नागौर में दीपावली पर बाजारों में रोशनी की गई।

नागौर, (निसं)। शहरभर में रोशनी का पर्व व उमंग उल्लास के साथ मनाया गया। शहरवासियों ने शुभ मुहूर्त में अपने घरों और प्रतिष्ठानों में लक्ष्मी पूजन कर सुख समृद्धि की मंगल कामना की। साथ ही पटाखे और रंग बिरंगी आतिशबाजी से आसमान सरोबार हो उठा। मंदिरों से लेकर घर पूरी तरह रंग बिरंगी आकर्षक रोशनी से जगमगा उठे। महिलाओं बच्चों और युवाओं ने जमकर आतिशबाजी का आनंद लिया।

दीपावली के दिन सुबह से शहर के मुख्य बाजारों में खरीदारी करने के लिए अच्छी खासी भीड़ रही। शहर वासियों ने घरेलू साज सज्जा,मांडने, दीपक, लक्ष्मी पूजन सामठी, फल फूल, सुंदर वस्त्र, मिठाई , खरीदते नजर आए। साथ ही शहर वासियों ने कपड़े और वाहन भी खरीदे। बाजारों में पटाखे की अस्थाई दुकानों पर भी शहर वासी पटाखे खरीदते नजर आए। दीपावली को शाम को शहरवासियों ने सुंदर वस्त्र पहनकर शुभ मुहूर्त में घरों में दीप प्रज्वलित किये। इसके बाद इसके बाद शुभ मुहूर्त में भगवान गणेशजी, लक्ष्मी जी सरस्वती देवी, भगवान कुबेर से सुख समृद्धि की कामना के साथ पूजन किया। लक्ष्मी पूजन के पश्चात शहरवासी अपने परिवारों के साथ बाजार की रोशनी देखने गए।

शहर के गांधी चौक, तिगरी बाजार, सदर बाजार, सर्राफा बाजार, किले की ढाल सहित अनेक जगह आकर्षक सजावट और रोशनी की गई। बंजारों की रोशनी आकर्षण का केंद्र रही। शहर के मुख्य बाजार रोशनी से गुलजार नजर आ रहे थे। शहर में दीपावली के अवसर पर यातायात व्यवस्था को सुचारु करने के लिए जगह-जगह पुलिस बल तैनात रहा वहीं शहरवासियों ने शुक्रवार को सुबह गोवर्धन पूजा कर सुख समृद्धि की कामना की इसके पश्चात महिला, पुरुष, और बच्चों ने सुंदर परिधान पहनकर अपने रिश्तेदारों के घर जाकर दीपावली की शुभकामनाएं दी।

मंदिरों में अन्नकूट महोत्सव का आयोजन

घरों में गोबर से गोवर्धन बनाने के साथ महिलाओं ने पूजा की।

भीलवाड़ा, (निसं)। दिवाली के बाद कार्तिक मास की शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा को गोवर्धन पूजा और अन्नकूट प्रसादी का आयोजन हुआ। शनिवार की सुबह घर घर में गोबर से भगवान गोवर्धन बनाने के साथ ही महिलाएं गाय की पूजा में जुट गई। कई मंदिरों में अन्नकूट महोत्सव भी आज मनाया जाता है।

ऐसी मान्यता है कि इंद्र के कोप से हो रही वर्षा से गोकुलवासियों की रक्षा के लिए भगवान श्रीकृष्ण ने अपनी दिव्य शक्ति से विशाल गोवर्धन पर्वत को छोटी अंगुली पर उठाया था। भगवान श्रीकृष्ण के प्रिय गोवर्धन पर्वत की तभी से पूजा की जाती है। इंद्र को जब पता चला कि कृष्ण ही विष्णु अवतार हैं, तब उन्होंने उनसे माफी मांगी, इसके बाद श्रीकृष्ण ने गोवर्धन पूजा के लिए कहा और इसे अन्नकुट पर्व के रूप में मनाया जाने लगा। वेदों के अनुसार, इस दिन वरुण, इंद्र, अग्नि की पूजा की जाती है। साथ में गायों का श्रृंगार करके उनकी आरती की जाती है और उन्हें फल मिठाइयाँ खिलाई जाती हैं। गाय के गोबर से गोवर्धन पर्वत की प्रतिकृति बनाई जाती है। इसके बाद उसकी पुष्प, धूप, दीप, नैवेद्य से उपासना की जाती है। इस दिन एक ही रसोई से घर के हर सदस्य का भोजन बनता है। भोजन में विविध प्रकार के पकवान बनाए जाते हैं। सुबह के वक्त शरीर पर तेल मलकर स्नान करने और घर के मुख्य द्वार पर गाय के गोबर से गोवर्धन की आकृति बनाने, गोबर का गोवर्धन पर्वत बनाकर ग्वाल बाल, पेड़ पौधों की आकृति बनाने का विधान है। मध्य में भगवान कृष्ण की मूर्ति भी कई जगह रखी जाती है इसके बाद भगवान कृष्ण, ग्वाल-बाल,और गोवर्धन पर्वत का पूजन कर उन्हें पकवान और पंचामृत का भोग लगाया जाता है।

राशिफल रविवार 3 नवम्बर, 2024

पंडित अनिल शर्मा

कार्तिक मास, शुक्ल पक्ष, द्वितीया तिथि, रविवार, विक्रम संवत 2081, अनुराधा नक्षत्र सोमवार प्रात: 8:04 तक, सौभाग्य योग दिन 11:39 तक, बालव करण प्रात: 9:14 तक, चन्द्रमा वृश्चिक राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थिति: सूर्य-तुला, चन्द्रमा-वृश्चिक, मंगल-कर्क, बुध-वृश्चिक, गुरू-वृष, शुक्र-वृश्चिक, शनि-कुम्भ, राहु-मीन, केतु-कन्या राशि में।

आज राजयोग सम्पूर्ण दिन-रात रहेगा। आज चन्द्र दर्शन, उत्तर श्रृंगोन्नति, भैरव दूज, यम द्वितीया, विश्वकर्मा दिवस, चित्रगुप्त पूजा, कलम दवात पूजा (बिहार) है।

श्रेष्ठ चौघड़िया: चर 8:04 से 9:26 तक, लाभ-अमृत 9:26 से 12:10 तक, शुभ 1:32 से 2:55 तक।

राहूकाल: 4:30 से 6:00 तक। सूर्योदय 6:42, सूर्यास्त 5:39

मेष
चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ नहीं है। पारिवारिक कार्यों के कारण भागदौड़ रहेगी। परिवार में स्वास्थ्य संबंधित परेशानी हो सकती है। आज नवीन कार्यों को टालना ठीक रहेगा।

वृष
परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा। धार्मिक-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। आपसी सहयोग-समन्वय बना रहेगा। स्वास्थ्य संबंधित चिन्ता दूर होगी।

मिथुन
अस्त-व्यस्त दिनचर्या में सुधार होगा। विवादित मामलों से राहत मिल सकती है। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी। आवश्यक कार्य के लिए यात्रा संभव है।

कर्क
परिवार में शुभ-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। आज समय रचनात्मक कार्यों में व्यतीत होगा। स्वास्थ्य संबंधित मामलों में लापरवाही ठीक नहीं रहेगी।

सिंह
घर-गृहस्थी के खर्चों में अनावश्यक वृद्धि हो सकती है। अतिथियों के आगमन से दिनचर्या अस्त-व्यस्त हो सकती है। आज खान-पान के कारण स्वास्थ्य खराब हो सकता है।

कन्या
आर्थिक मामलों में परिचितों से सहयोग मिल सकता है। महत्वपूर्ण कार्यों से संबंधित वार्ता सफल रहेगी। परिवार में मन को प्रसन्न करने वाले संदेश प्राप्त होंगे।

तुला
आर्थिक कारणों से अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। नवीन कार्य योजना का क्रियान्वयन होगा। वाणी पर संयम रखना ठीक रहेगा।

वृश्चिक
मानसिक तनाव से राहत मिलेगी। मनोबल-आत्मविश्वास बढ़ेगा। आवश्यक कार्य योजनानुसार बनने लगेंगे। आवश्यक कार्य के लिए यात्रा संभव है। परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा।

धनु
परिवार में स्वास्थ्य संबंधित परेशानी हो सकती है। अनहोनी की आशंका से बना हुआ मन का भय समाप्त होगा। घर-गृहस्थी के खर्चों में अनावश्यक वृद्धि हो सकती है। अनर्गल कार्यों में समय खराब होगा।

मकर
आर्थिक/वित्तिय मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा। आय में वृद्धि होगी। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक आय में वृद्धि होगी। स्वास्थ्य ठीक रहेगा।

कुंभ
अपने अति आवश्यक कार्यों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करें। प्रयासों में उचित सफलता मिलेगी। नवीन कार्यों में आ रही अड़चनें दूर होने लगेंगी। परिवार में धार्मिक-सामाजिक समारोह सम्पन्न हो सकते हैं।

मीन
नवीन कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। शुभ कार्य के लिए यात्रा संभव है। महत्वपूर्ण कार्यों से संबंधित यात्रा संभव है।